REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 8 | MAY - 2024

चन्द्रकिरण सौनरेक्सा के कृतित्व अध्ययन

जय प्रकाश साकेत
शोधार्थी हिन्दी
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. लता द्विवेदी
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष हिन्दी
शासकीय विज्ञान महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

चन्द्रकिरण सौनरेक्सा के साहित्य का विषय क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। भारतीय जीवन की अधिकांश समस्याएँ उनकी लेखनी का विषय रही हैं। साहित्यकार की धार्मिक भावना बाह्याडम्बरों और अंधविश्वासों से मुक्त होकर मानवतावाद की परिधि का स्पर्श करती है। उन्होंने गत्यावरोधक रूढ़ियों का प्रबल विरोध किया है। अर्थ के आधार पर विभक्त समाज के तीनो वर्गों–उच्च, मध्य और निम्न वर्ग का अंकन करते हुए समाजवादी समाज की स्थापना करना ही चन्द्रकिरण सौनरेक्सा का ध्येय रहा है।

मुख्य शब्द – चन्द्रकिरण सौनरेक्सा, साहित्य, भारतीय जीवन एवं समस्याएँ।

प्रस्तावना –

कृतित्व की दृष्टि से देखा जाये तो वे अत्यन्त परिश्रमशील साहित्यकार रही हैं। प्रथम कहानी अछूत 1931 में प्रकाशित हुई, सन् 1946 में सेक्सरिया पुरस्कार प्राप्त कहानी संग्रह 'आदमखोर' को लंदन विश्वविद्यालय के 'द इन्स्टिट्यूट ऑफ ओरियण्टल स्टडीज' पाठ्यक्रम में शामिल किया गया।1956–79 तक आकाशवाणी, लखनऊ में लेखन कार्य करते हुए अनेक नाटकों, कहानियों, वार्ताओं व बाल–साहित्य का सृजन व प्रसारण किया। तीन सौ से अधिक कहानियाँ, चार उपन्यास–'चन्दन चाँदनी', 'वंचिता', 'और दिया जलता रहा', 'कहीं से कहीं नहीं'। छाया, व 'ज्योत्सना' उपनाम से रचित कविताएँ, बाल साहित्य, रूसी में अनूदित कहानी संग्रह आदि की रचना की है।

चन्द्रकिरण सौनरेक्सा की कृतियाँ निम्नांकित हैं –

कहानी –

1. हिरनी (कहानी संग्रह), दिल्ली : सहयोग प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2010
2. सौदामिनी (कहानी संग्रह), नई दिल्ली : शारदा प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2010
3. दूसरा बच्चा (कहानी संग्रह), नई दिल्ली : बाल सभा प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2010
4. नासमझ (कहानी संग्रह), नई दिल्ली : डी.जे. पब्लिकेशन्स, प्रथम संस्करण 2011
5. आधा कमरा (कहानी संग्रह), दिल्ली : ईस्ट एण्ड पब्लिकेशन्स, प्रथम संस्करण 2011

6. खुदा की देन (कहानी संग्रह), मयूर : वाई.डी. पब्लिकेशन्स, प्रथम संस्करण 2011
7. उधार का सुख (कहानी संग्रह), मयूर : नालन्दा प्रकाशन, संस्करण 2011
8. वे भेड़िए (कहानी संग्रह), नई दिल्ली : झारीसन प्रेस एण्ड पब्लिकेशन्स, प्रथम संस्करण 2012
9. ए क्लास का कैदी (कहानी संग्रह), नई दिल्ली : पराग प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2012

उपन्यास –

1. और दिया जलता रहा, हापुड़ : मुहिम प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2003
2. कहीं से कहीं नहीं, हापुड़ : मुहिम प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2003
3. चंदन चाँदनी, नई दिल्ली : समानान्तर प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2008
4. वंचिता, नई दिल्ली : समानान्तर प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2008

आत्मकथा –

1. पिंजरे की मैना (आत्मकथा), नई दिल्ली : पूर्वोदय प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2010

बाल साहित्य –

1. जग्गो ताई (बाल साहित्य), नई दिल्ली : नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, प्रथम संस्करण 2003

विश्लेषण –

चन्द्रकिरण सौनरेक्सा की अधिकांश कहानियाँ एवं रचनायें तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओं पंकज, माया, शान्ति, चाँद, विश्ववाणी, आज, आजकल, नवयुग, मनोरंजन, विजय, सरगम, जनसेवक, कल्पना, राष्ट्रवाणी, प्रयाग, सैनिक, सारिका, कादम्बिनी, धर्मयुग, घर, नीहारिका, ज्ञानोदय, साप्तहिक हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स में छपी, जिनमें से अधिकांश आज प्राप्त नहीं है। इनकी जो कहानियाँ प्राप्त हैं, वह अभी हाल के वर्षो में 9 नवीनतम प्रकाशित कहानी संग्रह में संकलित की गयी हैं। इन संग्रहों में पूर्व में प्रकाशित अन्य कहानी संग्रह की समस्त कहानियाँ सम्मिलित की गयी है। जिनका विवरण निम्नांकित है–

कहानी परिचय –

(1) हिरनी (कहानी संग्रह) – हिरनी (कहानी संग्रह) में कुल 14 कहानियाँ है। जिनका विवरण निम्न है–वहम के पुतले, तूफान, भ्रम, हिरनी, सौदा, निरूपाय, अकीला, ममता, नारी, संसार का सुख, भाभी का मजाक, छुटकारा, परख, गेंदा बन जाऊँगी आदि।

(2) सौदामिनी (कहानी संग्रह) – सौदामिनी (कहानी संग्रह) में कुल 17 कहानियाँ हैं, जिनका विवरण निम्न है–चिर कुमार, छलिया, कायर, पहली भूल, गृहस्थी का सुख, बनवारी, चाय में नींबू, अन्तर, जीजी, सौदामिनी, मर्द, एजूकेटेड वाइफ, अधिकार, सोना की माँ, टोटका, कमीनों की जिन्दगी में, दरिन्दे, ये शिकार' आदि।

(3) दूसरा बच्चा (कहानी संग्रह) – दूसरा बच्चा (कहानी संग्रह) में कुल 21 कहानियाँ है। जिनका विवरण निम्न है–खटराग, बंजर, मानव की अमरता, आवारा, सिर्फ नौ जमातें, जिन्दगी की माँग, तीसरी कोशिश, दूसरा बच्चा, परम्परा, काया और कल्पना, इज्जत–हतक़, अच्छा लड़का, अच्छी लड़की, प्रेम का प्रयोग, निशानी, धरती के पुत्र, डेड लॉक, सबोटाज, प्रेम और रोटी, जनता के ये प्रतिनिधि, असन्तोष क्यों, खाई आदि।

(4) नासमझ (कहानी संग्रह) – नासमझ (कहानी संग्रह) में कुल 26 कहानियाँ हैं, जिनका विवरण निम्न है–जब नीरू नरगिस बनी, कवयित्री, फोटोग्राफर, 'लाल गुलाब, पीले गुलाब, पूर्व जन्म के पाप, बहू–बेगम, सती मुक्ता, मुरारी बाबू, मूड और दुनिया, भतीजे की डायरी, थोक का भाव, गुलाब की पंखुरी, चमत्कार, लक्ष्मण–रेखा, कंगन, नासमझ, सुराज कुमारी, गरीब का दिल, शिकायत, साइकिल, बोद्दा, कॉपी राइट, नन्दलाल, लॉ मैरिज, देसी गेहूँ, शाकुंतल आधुनिकम् आदि।

(5) आधा कमरा (कहानी संग्रह) – आधा कमरा (कहानी संग्रह) में कुल 21 कहानियाँ हैं, जिनका विवरण निम्न है–दहकते कोयले, लक्ष्मी के चरण, प्यार की छाँह, बदनाम लोग, किस्मत, आशा और निराशा, कल्याणी, खास पहचान, अफसर का बेटा, प्यार की पुतली, बेटी की कमाई, आँगन की चाँदनी, करूणा, माँस और रोटी,

आत्महन्ता, आधा कमरा, 'रेखाएँ और वर्ग, वर्ग और वृत्त, एक किरण प्यार की, सभ्यता की ओर, चोर, हाथी के दाँत आदि।

(6) खुदा की देन (कहानी संग्रह) – खुदा की देन (कहानी संग्रह) में कुल 28 कहानियाँ हैं जिनका विवरण निम्न है–ज़ियारत, माँ, ममता और पेट, लड़ाका, हरामजादी, मोह, रिश्ते नाते, 'अफसर, प्यार और मोनालिसा', खून का रिश्ता, अपना–अपना दुःख, खुदा की देन, बड़े घर की बेटी, दोषी कौन?, प्रमोशन, ताबीज, नई पौध, कुत्ता और इन्सान, इन्तजार, वायदा, लकीरें, घर की इज्जत, मजबूर, स्टाफ आर्टिस्ट, अग्नि परीक्षा, रानी बेटी, कविता का जन्म, मेरी, तेरी उसकी बात, दर्द, जाहिल आदि।

(7) उधार का सुख (कहानी संग्रह) – उधार का सुख (कहानी संग्रह) में कुल 22 कहानियाँ हैं, जिनका विवरण निम्न है–माली, जानकी, बर्थ डे, बात का धनी, 'ये बड़े! ये छोटे!, देश–देश की बात, फूल और काँटे, पुराने चावल, सस्ता तेल, काली लड़की, आर्टिस्ट, बेईमान, सपना टूट गया, 30 तारीख, सुबह की कमजोरी, नमिता, उधार का सुख, स्टैंडर्ड, दो कदम पीछे, एक कदम आगे, शाम का भूला, बड़े कमीन...छोटे कमीन, शहर की नाक आदि।

(8) वे भेड़िया (कहानी संग्रह) – वे भेड़िए (कहानी संग्रह) में कुल 20 कहानियाँ हैं, जिनका विवरण निम्न है–राह के रोड़े, घर की फूट, किशोर, मझली बहू, 'आजादी के पहले, आजादी के बाद, 'हम इन्सान, ये जानवर' कॉमरेड, विषम, दो राष्ट्र और एक इन्सान, नारी शक्ति है, देश की मौत, 'धर्म मरा, राष्ट्र जिया', कब्र पर, अधूरी आजादी, वे भेड़िए, कुचक्र का अन्त, आर्त्तनाद, रईसों की महफिल, प्रयोग, रानी और दासी आदि।

(9) ए क्लास का कैदी (कहानी संग्रह) – ए क्लास का कैदी (कहानी संग्रह) में कुल 16 कहानियाँ हैं, जिनका विवरण निम्न है–'न खुदा ही मिले, न बिसाले सनम', लाटरी, दीमक, बेजुबाँ, ए क्लास का कैदी, रूपया, बोलती लाश, आदमखोर, दो रोटियाँ, 'क्या जिन्दगी, क्या मौत', किराए की माँ, सुभद्रा, जवान मिट्टी, अबूझ, खूँटे की गाय, किसी की करनी, किसी की भरनी आदि।

उपन्यास परिचय –

उपन्यास परिचय की दृष्टि से सौनेरेक्सा का साहित्य अत्यन्त समृद्ध है। इनके उपन्यासों में चंदन चाँदनी, वंचिता, और दिया जलता रहा, तथा कहाँ से कहाँ नहीं सुप्रसिद्ध हैं जिनका परिचय निम्नांकित है–

(1) 'और दिया जलता रहा' –

'और दिया जलता रहा' की कहानी एक स्वाभिमानी लड़की 'दीप्ति' के आस–पास घूमती है। दीप्ति की माँ जो कि विधवा है तथा अपने देवर के साथ रहती है। दीप्ति की माँ को फुसलाकर उसके चाचा, चाची की अनुपस्थिति में, 'गर्भवती' कर देते है तथा उस पर बच्चे को गिराने का दबाव डालते हैं जिसके फलस्वरूप दीप्ति की माँ की तबियत अत्यधिक खराब हो जाती है। मध्यवर्गीय पुरूष का घृणित रूप चाचा के इस कथन में स्पष्ट है ''बात खुल गई तो तुम्हारी बेटी की जिन्दगी बिगड़ेगी, मेरा क्या है? मैं मर्द बच्चा हूँ, साफ मुकर जाऊँगा।''[1] जब इस बात का पता दीप्ति को चलता है तो वह अपनी माँ के गर्भ में पल रहे शिशु के जन्मने का निर्णय लेती है तथा समाज के सामने वह बिन ब्याही माँ बनने का नाटक करती है। बिन व्याही माँ बनने के कारण दीप्ति को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। समाज के कुछ सफेदपोश लोग उसे झूठी हमदर्दी के नाम पर फँसाना चाहते हैं लेकिन वह किसी के जाल में नहीं फँसती है। उपन्यास के अन्त में दीप्ति उदारमन उमेश जैसा जीवन साथी पाने में सफल होती है।

(2) 'कहीं से कहीं नहीं' –

'कहीं से कहीं नहीं' की कथा का नायक रतन एक साधारण परिवार का युवक है। एक बार इण्टर की परीक्षा में फेल हो चुका है। परिवार को उससे बड़ी आशायें हैं, इसलिए वह अपने परीक्षाफल को लेकर बहुत चिंतित है। लेकिन इस बार भी उसे चिन्ता से मुक्ति नहीं मिलती, वह फिर फेल हो जाता है। यह फेल होना उसे इतना आतंकित करता है कि वह अपने परिवार के सामने आने का साहस नहीं कर पाता है और बिना किसी से कुछ कहे घर छोड़कर बरेली से लखनऊ जाने वाली ट्रेन पर बिना टिकट लिए यात्रा प्रारम्भ कर देता

है। सौभाग्य से लखनऊ रेलवे स्टेशन पर उसे उसके बचपन का दोस्त मिल जाता है जो कि उसे स्टेशन से बाहर आने में मदद करता है तथा अपने घर पर कुछ दिन ठहरने का उचित स्थान भी देता है।

घर छोड़कर जाने और फिर वापस लौट जाने की अवधि कुछ बहुत अधिक नहीं है, लेकिन जितनी भी है उसमें रतन इतने अनुभवों को प्राप्त करता है जितने कि शायद एक साधारण मनुष्य अपनी पूरी जिंदगी में न पाता हो।

इस प्रक्रिया में एक दिन उसकी अपने एक मुस्लिम दोस्त से भेंट हो जाती है। वह उसे अपने घर ले आता है। उस घर में उसका एक दोस्त की तरह स्वागत होता है, लेकिन यहाँ भी उसे छुआछूत के प्रश्न का सामना करना पड़ता है। उसके मित्र की माँ अपने बेटे से कहती है, ''आटा घर में है, दाल भी पक चुकी है पर.....।''

रतन ने अब बीच में टोककर कहा, ''पर–वर कुछ नहीं, अम्मा मैं आपके हाथ का पका खा लूंगा।''

'नहीं बेटा, हम यह गुनाह क्यों मोल लें? तुम्हारा ईमान बिगाड़े। तुम्हारी बिरादरी को पता चलेगा, तो तुम्हारे माँ–बाप का हुक्का–पानी बंद हो जायेगा।''[2]

रतन अपने मुस्लिम दोस्त के घर के सदस्य की तरह ही रहता है, लेकिन वह यहाँ हमेशा तो नहीं रह सकता। उसे अपने लिए कोई न कोई काम ढूँढ़ना है। लेकिन यहाँ रहते हुए उसको एक दकियानूसी मुसलमान बुजुर्ग के अतिरिक्त एक प्रगतिशील युवती के विचारों का परिचय भी मिलता है।

इसी तरह रतन जहाँ भी जाता है, उसके सामने एक नया संसार खुलता चला जाता है, लेकिन उसकी तो अपनी समस्या है कोई काम तलाश करने की। तलाश करने की इस प्रक्रिया में वह अनेक अनुभवों में से गुजरता है।

उपन्यास में मुस्लिम मित्र के घर में छुआछूत का अनुभव तो हुआ ही लेकिन साथ ही हिन्दू जमींदार परिवार विक्रम के घर जाने पर पाया कि बूढ़ी दादी पूजा करके आ रही हैं, विक्रम उनके पैर छूता है। दादी उसे आशीर्वाद देती हैं और साथ में एक पेड़ा भी देती हैं। रतन भी दादी के पैर छूने को आगे बढ़ता है, तो दादी पीछे हटते हुए अपनी धुँधली आँखों से उसे देखते हुए पूछती है, ''कवन जात हो भैया? इससे पहले की रतन कुछ बोलता, विक्रम बोल उठा, बामन है बामन, अब पैर छूने दो।

अरे बामन हो। तब तो बहुतै नीक बा, कबौ जब हमार जीया नीक ना रहीं, तो ठाकुरौ को अन्हवाय सकत है। कौन बामन हो भैया? दादी ने पूछ ही लिया।

रतन घबरा कर अनायास ही बोल उठा–गौड़ विरामन हूँ दादी। कवन गौड़ भैया? दादी ने पलटकर फिर पूछा।

अब विक्रम बिगड़ा, ऐ लो, अब गौड़ में भी कवन घुस गया, बामन है, इतना क्या काफी नहीं है? हमें क्या इससे रिश्तेदारी जोड़नी है? जल्दी से सामान बताओ जो बाजार से लाना है। बाबूजी के पास आदमी बैठे हैं। अभी इसकी गुहार पड़ने लगेगी।

रहे देव, तू और तोर बाबू दोनों मलिच्छ हो। अण्डा–मुरगी खात हो। ऊ सबका ई बनाय सकत है। दुये दिन माँ काम छोड़ जैहे....दादी बोली।

विक्रम ने जवाब दिया, अरे दादी की बातें..... कनौजिया बामन सब माँस–मच्छी खाते हैं।

माँस–मच्छी की बात अलग है। हम तो अण्डा/मुरगी की बात करित है। अच्छा भैया, तू लाय दे तरकारी–भाजी। महाराजिन भी घरै बैठ गयी है, सो अभी रसोई पानी सब करै का परै। ..... बहुरिया को आज छूना नहीं है।'' दादी ने रतन को आदेश दिया।''[3]

'कहीं से कहीं नहीं' उपन्यास में इसी प्रकार के अनुभव कॉलेज के लड़के–लड़कियों के भी हैं। नौकरी की तलाश करते–करते रतन एक व्यापारी की दुकान में काम करने लगता है और वहीं अचानक उसकी भेंट हो जाती है उसके एक ताऊ से। वह उसे पहचान लेते हैं और डाँटते हैं। कहते है, ''ससुरे फेल हो गया था, तो इस बार और मेहनत करता।'' रतन घबरा जाता है। उसके ताऊ उसे वहाँ से जबरदस्ती पकड़ कर ले जाते हैं और उसे समझाते हैं, ''बा पके बुढ़ापे का भी तुझे ख्याल नहीं आया। तीन–तीन लड़कियाँ हैं। तू ही तो उनका एक सहारा है। कायस्थ बच्चा पढ़ा भला या मरा भला। अंग्रेजी का मास्टर लगवा दूँगा। ना होगा उसका बोझ मैं खुद उठा लूंगा। बस तू बी.ए. कर लेता तो कहीं न कहीं नौकरी लग जायेगी। मेरा मनमोहन सैक्रेटेरिएट में लग गया है। वह कोई न कोई जुगाड़ बैठा ही देगा।''[4]

उपन्यास 'कहीं से कहीं नहीं की कथावस्तु समसामयिक हृदयग्राही एवं रोचकता से परिपूर्ण है। रतन की कहानी आज के नवयुवकों का पथ–प्रदर्शन करने वाली है। इस अधूरे उपन्यास को चन्द्रकिरण सौनरेक्सा ने सन् 2001 में पूरा किया। यह उपन्यास चन्द्रकिरण सौनरेक्सा द्वारा लिखा गया अन्तिम उपन्यास था।

(3) 'चंदन चाँदनी' –

'चंदन चाँदनी' चन्द्रकिरण सौनरेक्सा का एक सामाजिक उपन्यास है। गरिमा अपने नाम को सार्थक करने वाली पढ़ी–लिखी, शीलवरी, गम्भीर, पति–परायणा नारी है। राज आदर्शवादी कलाकार हैं। उसे नाटकों से प्रेम है और वह रंगमंच की स्थापना करने और नाटकों को अभिनीत करने की अपनी धुन में अपने को मिटा देता हैं। आन्तरिक मनमुटाव के कारण परिस्थितियाँ दोनों को एक दूसरे से दूर कर देती हैं। दोनों एक दूसरे से दूर के बाद तरह–तरह की समस्याओं का सामना करते हैं, जिसमें गरिमा अपने आफिस में अपने बॉस की कुदृष्टि से अपने आप को बचाती है और गरिमा के पति राज लखनऊ में आधुनिक नारियों की उच्छृंखल कामुकता के हाथ के जाने से अपने आप को बचाता है। परन्तु दोनों (राज और गरिमा) की आन्तरिक चारित्रिक दृढ़ता उनकी रक्षा करती है और जब ये बिछुड़े पति–पत्नी आपस में मिलते हैं, तो दोनों का निष्कलंक तन और निष्कलुष मन एकाकार हो जाता है।

चन्द्रकिरण ने इस उपन्यास के माध्यम से भारतीय पुरूष प्रधान समाज पर करारा व्यंग्य किया है। बाहर काम करने के मामले में भारतीय मध्यवर्ग आज भी, स्कूल, अस्पताल तक तो नारी का कार्यक्षेत्र स्वीकार कर लेता है, पर दफ्तर, फैक्ट्री आदि अन्य पुरूष वर्चस्व वाले क्षेत्रों में नारी के काम करने के प्रश्न पर पुरूष समाज असहमति दर्शाता है। गरिमा जब शादी के बाद दफ्तर में नई नौकरी कर लेती है तो उसका बेरोजगार पति एवं ससुराल वाले बहुत नाराज होते है।

गरिमा ने राज से प्रेम विवाह दोनों परिवारों की आपसी सहमति से किया था। भारतीय समाज में प्रेम–विवाह को आज भी इज्ज़त की दृष्टि से नहीं देखा जाता है। मध्यवर्गीय मनोविज्ञान प्राचीन भारतीय संस्कार से आज भी पूर्णतः मुक्त नहीं है और शायद जब से हमें पाश्चात्य–स्वच्छंदता के कुपरिणाम, टूटते परिवारों और नैतिक अवमूल्यन के रूप में दृष्टिगोचर हुए हैं, हम उस मध्यवर्गीय नैतिकता को एक झटके से निर्मूल हटाने का दुस्साहस करना भी नहीं चाहते। बाहर की दुनिया में आधुनिकता के विकृत रूप से भी भारतीय नारी को खतरा है। हमारे समाज में नर–रूप में भेड़िये, अवसर की तलाश में रहते हैं, कि कब नारी की विवशता का लाभ उठाया जाये और उसकी शिकार मध्यवर्गीय नारी सबसे ज्यादा है, क्योंकि वही उच्च मध्य वर्ग का दृढ़ आर्थिक आधार देने के लिए दफ्तर, फैक्ट्री, होटल, अदालत, बाजार में बाहर निकली हैं। जब गरिमा कमाऊ बहू बनती है तब ससुराल में उसकी इज्जत बढ़ जाती है। लेकिन उसका बेरोजगार पति उससे कटा–फटा रहता है। आफिस में गरिमा के बॉस पाकर उससे छेड़खानी करते हैं तब गरिमा अपना आत्म–विश्लेषण करती है, और पाती है कि ''मुझे पति–परित्यक्ता समझकर ही साहब को ऐसा साहस हुआ। वह कितने ही बदमाश हों, परन्तु मेरी व्यथा से परिचित ने होते, तो कभी भी आज की घटना न घटती।''[5] गरिमा मर्यादित, स्वस्थ परिवार के लिए, नौकरी छोड़ देती है क्योंकि उसके पति के उससे रूठने की प्रमुख बजह उसकी नौकरी ही थी।

आफिस से घर पहुँचते ही गरिमा को ज्यों ही अपने रूठे हुए पति का प्रेम पत्र मिलता है जिसमें लिखा था – ''तुम आ जाओ! चाहे दस दिन की छुट्टी लेकर आओ। पर तुरन्त आ जाओ। अम्मा रोकेगी। तुम मेरी बीमारी का बहाना कर देना। गिरी, इतने झूठ से हमारे घर में वहाँ किसी का नुकसान नहीं होगा। पर तुम आ जाओ। यह झूठ मुझे उबार लेगा। मैं डूबने ही वाला हूँ।''[6] पति का पत्र पाते ही गरिमा शीघातिशीघ्र अपने पति के पास लखनऊ पहुँच जाती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि रूढ़िवादी संयुक्त परिवार के बन्धनों तथा पति के मिथ्या स्वाभिमान के बीच में पिसती गरिमा के संघर्ष की कहानी है, 'चन्दन–चाँदनी'। ऑफिस में काम करती एक भारतीय नारी किस तरह अपने बॉस की कृदृष्टि का शिकार होते–होते अपने को बचाती है और कैसे बचाती है अपनी अस्मिता इसका अभूतपूर्व चित्रण चंदन–चाँदनी उपन्यास में मिलता है। समय बदल गया हैं और बदल गए हैं नैतिकता के मानदण्ड, पर आज भी मध्यवर्ग की नारी, समाज के भूखे भेड़ियों का शिकार हो रही हैं।

चन्द्रकिरण सौनरेक्सा ने 'चंदन चाँदनी' उपन्यास में मध्यम वर्गीय परिवारों के आन्तरिक अर्थ व्यवस्था और जीवन का अत्यन्त सफल चित्रण किया है। उन तत्वों को उभार कर रख दिया है, जिनसे आज हमारे युवा

वर्ग का व्यक्तित्व निर्मित होता है। इस उपन्यास के माध्यम से चन्द्रकिरण सौनरेक्सा ने स्खलित होते पुराने जीवन–मूल्यों के स्थान पर नवीन, सशक्त और जीवन्त मूल्यों की प्रतिष्ठा करने का सफल प्रयास किया है।

(4) 'वंचिता' –

'वंचिता' उपन्यास की 'जानकी' एक निम्नवर्गीय पन्द्रह वर्षीय अनाथ किशोरी है, जिसका विवाह छत्तीस वर्ष के विधुर से हो जाता है। जानकी अपने पति की पूर्व पत्नी के दो बच्चों को सगी माँ से ज्यादा प्यार देकर सन्तुष्ट है। पति की अचानक मृत्यु हो जाने के कारण चालीस वर्ष से कम आयु में पाँच बच्चों की कच्ची गृहस्थी सहित 'जानकी' विधवा हो पराश्रिता हो जाती है। अशिक्षित एवं दीनहीन जानकी जो कि बाहर की दुनिया से पूर्णतया अनभिज्ञ है, पति के मृत्यु के पश्चात् जानकी अपने देवर के आग्रह पर उसके घर में आश्रय लेती है, जानकी की देवरानी को यह कतई नापसन्द है कि कोई लम्बे समय तक उनके घर में रहे। जिसके लिए छल–माया का सहारा लेती है, जिसके फलस्वरूप वह अपनी जिठानी को घर से बाहर निकलने में सफल होती है। लांछित जानकी अपने सौतेले बेटे प्रकाश के यहाँ शरण लेने को बाध्य हो जाती है।

उच्च मध्यवर्गीय 'प्रकाश' जो कि जानकी का सौतेला बेटा है, प्रकाश एक कालेज में प्रोफेसर है, अपनी होशियारी और चतुराई के बल पर अपनी बीबी की नौकरी अपने स्कूल के प्रिंसिपल की खुशामद करके लगवा लेता है। उसकी सोच है कि यदि मैं अपनी सौतेली बहनों को पढ़ा–लिखा दूँगा तो उनके लिए अच्छा लड़का भी देखना पड़ेगा तथा ज्यादा दहेज भी देना पड़ेगा। इसलिए वह अपनी बहनों को पढ़ाना–लिखाना नहीं चाहता। प्रकाश अपने छोटे भाई को पढ़ाई के नाम पर घरेलू नौकर जैसा रखता है तथा अपनी सौतेली माँ को कोई काम नहीं करने देता है वह सोचता है कि यदि उसकी माँ कोई काम करेंगी तो इससे उसकी इज्जत कम होगी।

प्रकाश दहेज का पैसा बचाने के लिए अपनी सौतेली बहनों का विवाह दुहाजू व्यक्तियों के साथ करने का निर्णय लेता है लेकिन 'जानकी' उसकी यह चाल कामयाब नहीं होने देती है। जानकी अपने सौतेले बेटे प्रकाश से नाराज होकर पुनः अपने किराये के पुराने घर में लौट आती है। जहाँ वह अपनी जीविका चलाने के लिए एक मेस खोल लेती है, जिसका कि मोहल्ले वाले बड़ा विरोध करते हैं लेकिन मोहल्ले वालों की एक नहीं चलती है तथा जानकी का मेस चल निकलता है।

जानकी को पुनः समाज के क्रोध का सामना करना पड़ता है जब उसकी पुत्री तारा एक लड़के के साथ बम्बई भाग जाती है। बम्बई भागने के बाद तारा कुँवारी माँ बन जाती है तथा वह लड़का भी उसे छोड़कर भाग जाता है। जहाँ वह उसे बम्बई में खोजने में सफल होती है। वह अपनी बेटी तारा को अपने साथ लेकर अपने पुराने किराये वाले घर में लाती हैं तथा उसे अपने कलेजे से लगा लेती है और कहती है कि ''डरती होती तो ढूँढ़ने ही क्यों जाती.... ले ये दूध पी ले। मुझे अभी पिछली छत पे रसोई देखने भी जाना है।''[7] उपन्यास के अन्त में 'तारा' को जानकी के मकान मालिक का लड़का अपना लेता है।

नाटक परिचय –

सौनरेक्सा अभिनय कला में पारगंत थी। उन्होंने अपने जीवन की विषय परिस्थितियों में नुक्कड नाटक का अनेकशः वार अभिनय किया है। यही कारण है की उनकी अर्थिक दशा में उत्तरोत्तर सुधार होता गया। 'छाया' और 'ज्योत्सना' उपनाम से चन्द्रकिरण ने रूसी भाषा में अनुदित कहानी संग्रह 'द्येन रोद्येन्या' का नुक्कड नाटक का अनेकशः बार मंचन किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपनी कहानियों को आधार मानकर नुक्कड नाटकों को प्रदार्शित किया है। इतना ही नहीं दूरदर्शन पर प्रदर्शित फिल्म 'गुमराह' में लोक नाट्य की प्रस्तुति हुई है। विवेच्य परिप्रेक्ष्य में डॉ. उर्मिला का कथन है कि ''सजीव पात्रों की सृष्टि करने में वे शरत्चन्द के समकक्ष ठहरती हैं, तो सरल एवं प्रभावपूर्ण भाषा–शैली में मुंशी प्रेमचन्द से टक्कर लेती प्रतीत होती हैं।''[8]

इसी संदर्भ में सच्चितानन्द हीरानन्द वात्सयायन 'अज्ञेय' का अभिमत है कि ''तीव्रता की दृष्टि से चन्द्रकिरण सौनरेक्सा सबसे अधिक उल्लेखनीय है। ..... मध्यवर्गीय जीवन में पाखण्डों और स्वार्थ पर, आकांक्षाओं पर, चन्द्रकिरण इतनी गहरी चोट करती हैं कि पाठक तिलमिला उठे.....।''[9]

निष्कर्षतः चन्द्रकिरण सौनरेक्सा का नाटकीय ज्ञान एवं लेखन नुक्कड़ नाटकों के रूप में प्रसिद्ध आर्जित की है।

बाल साहित्य परिचय :–

चन्द्रकिरण सौनरेक्सा के बाल साहित्य 'जग्गो ताई' में सन् 1962 में जब भारत और चीन का युद्ध हो रहा था उस युद्ध में भारत के सैकड़ों वीरों का बलिदान हो रहा था जिनमें से एक वीर योद्धा जग्गो ताई का एकमात्र वारिस उनका भतीजा भी था। जो युद्ध में घायल होकर हास्पिटल में पड़ा हुआ था। जब जग्गो ताई को अपने घायल भतीजे के बारे में समाचार मिला तो जग्गो ताई ने अपने पूर्वजों की धरोहर एकमात्र हवेली जिसे वह प्राणों से ज्यादा प्यार करती थी बेचकर उसे राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में दान कर दिया था। जिससे देश की सीमा पर लड़ने वाले सैनिकों को उन्नत किस्म के हथियार मिल सके। उदाहरण द्रष्टव्य है–''कोई ग्राहक हो तो बताना मैं हवेली बेचूंगी।'' ''हवेली बचोगी?'' लाला को मानो बिजली छू गई। ''हां देवर–और अपने गहने मैं सुरक्षा कोष में दे दूंगी। हवेली में रहने वाला ही न रहेगा तो हवेली का क्या होगा। मैं यह सब रकम भी हथियार खरीदने को दे दूंगी।''[10]

निष्कर्षतः चन्द्रकिरण सौनरेक्सा का बाल साहित्य युग विशेष का सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं आर्थिक जीवन परस्पर घनिष्ठ रूप से संबद्ध रहता है। साहित्य का स्वर जहाँ समाज की अनेक समस्याओं को लेकर अतिशय मुखर रहा है, वहीं उनमें युगीन इतिहास भी समग्रता के साथ रूपायित हुआ है।

अन्य परिचय (कविताएँ एवं आत्मकथा) :–

चन्द्रकिरण की कविताएँ 'छाया' और 'ज्योत्सना' नाम से पत्रिकाओं में छपी हुई है। उक्त नाम से रचित कविताएँ –

कविताएँ–

1. छाया (उपनाम से रचित)
2. ज्योत्सना (उपनाम से रचित)

छाया और ज्योत्सना उपनाम से रचित कविताएँ जो आजादी के समय तत्कालीन पत्रिकाओं में छपी थी, उनके संस्करण आज प्राप्त नहीं है।

आत्मकथा :–

पिंजरे की मैना (आत्मकथा) जो चन्द्रकिरण सौनरेक्सा द्वारा सन् 2001 के बाद लिखी गयी इनकी अन्तिम रचना है। चन्द्रकिरण सौनरेक्सा ने मुख्यतया चौथे दशक के उत्तरार्द्ध से लेकर आठवें दशक तक निरन्तर लेखन–कार्य किया है। उनकी कहानियों और उपन्यासों में प्रत्येक वर्ग के जीवन के उत्पीड़न को बिना किसी नाटकीयता और रोमानी आवरण के, सहज रूप में अभिव्यक्त किया गया है। उनका कोई भी पात्र, कुंठित काम–वासना या अन्य किसी भी मानसिक विकृति का शिकार नहीं है। नगरीय निम्न, निम्न–मध्य वर्ग एवं उच्च वर्ग के पारिवारिक जीवन से, उन्होंने चिर–परिचित माता–पिता, भाई–बहन, पुत्री, पत्नी, प्रेमिका को घर तथा बाहर दोनों क्षेत्रों में प्रस्तुत किया है। चन्द्रकिरण सौनरेक्सा ने जीवन की किताब बहुत गहराई से पढ़ी थी इसीलिए उन्होंने अपने कथासाहित्य में जीवन के प्रत्येक पहलू को छूने का प्रयास किया है।

चन्द्रकिरण सौनरेक्सा ने पत्र पत्रिकाओं में कविताएँ, रेड़ियो, दूरदर्शन वार्ता, साक्षात्कार तथा आत्मकथा का लेखन करते हुए हिन्दी जगत को अमूल्य निधि प्रदान किया है। समाज, संस्कृति, राजनीति, मनोविज्ञान एवं इतिहास का विशेष रूप से अनुभव करते हुए सौनरेक्सा जी ने विराट साहित्य सृजन का अनुभव करते हुए लोगों का मनोरंजन एवं मार्गदर्शन किया है।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः चन्द्रकिरण सौनरेक्सा ने अपनी कहानियों के माध्यम से सामाजिक चेतना को जागरूक करने का प्रयास किया है। उनकी कहानियाँ आम आदमी की जिंदगी के विभिन्न पहलुओं को छूती हैं और सामाजिक समस्याओं, जैसे कि अंतर–जातीय विवाह, जातिवाद, न्याय, समाज में न्याय की अभाव, बाल विवाह, बेटियों की शिक्षा आदि पर ध्यान केंद्रित करती हैं। उनकी कहानियाँ आम जनता की जिंदगी में गहराई से समाज की समस्याओं को उजागर करती हैं और वास्तविकता को दर्शाने का काम करती हैं। उनके लेखन में सामाजिक

न्याय और इंसानी अधिकारों की प्रतिष्ठा को महत्व दिया गया है। चन्द्रकिरण सौनरेक्सा के कहानी संग्रह में व्यक्तिगत और सामाजिक चेतना के विकास की महत्वपूर्ण कहानियाँ हैं, जो आम लोगों की जिंदगी के मामलों पर प्रेरणा और नजरिया प्रदान करती हैं।

संदर्भ –

[1] सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण – और दिया जलता रहा (उपन्यास), पृष्ठ 25
[2] सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण – कहीं से कहीं नहीं (उपन्यास), पृष्ठ 86
[3] सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण – कहीं से कहीं नहीं (उपन्यास), पृष्ठ 175–176
[4] सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण – कहीं से कहीं नहीं (उपन्यास), पृष्ठ 224
[5] सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण – चंदन चाँदनी (उपन्यास), पृष्ठ 200
[6] सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण – कहीं से कहीं नहीं (उपन्यास), पृष्ठ 201
[7] सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण – वंचिता (उपन्यास), पृष्ठ 118
[8] सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण – ना समझ (कहानी संग्रह), मुख फ्लैप पर अंकित, कथन–डॉ. उर्मिला
[9] सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण – ना समझ (कहानी संग्रह), मुख फ्लैप पर अंकित, कथन–'अज्ञेय'
[10] सौनरेक्सा, चन्द्रकिरण – जग्गो ताई (बाल साहित्य), नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, संस्करण 2023, पृष्ठ 12